

संतोषी माता चालोसा

दोहा

श्री गणपति पद नाय सिर, धरि हिय शारदा ध्यान।
सन्तोषी माँ की करूँ, कीरति सकल बखान॥

चौपाई 1

जय संतोषी माँ जग जननी।
खल मति दुष्ट दैत्य दल हननी॥

चौपाई 2

गणपति देव तुम्हारे ताता।
रिद्धि सिद्धि कहलावहं माता॥

चौपाई 3

माता-पिता की रहौ दुलारी।
कीरति केहि विधि कहूँ तुम्हारी॥

चौपाई 4

क्रीट मुकुट सिर अनुपम भारी।
कानन कुण्डल को छवि न्यारी॥

चौपाई 5

सोहत अंग छटा छवि प्यारी।
सुन्दर चीर सुनहरी धारी॥

चौपाई 6

आप चतुर्भुज सुघड़ विशाला।
धारण करहु गले वन माला॥

चौपाई 7

निकट है गौ अमित दुलारी।
करहु मयूर आप असवारी॥

चौपाई 8

जानत सबही आप प्रभुताई।
सुर नर मुनि सब करहिं बड़ाई॥

चौपाई 9

तुम्हरे दरश करत क्षण माई।
दुख दरिद्र सब जाय नसाई॥

चौपाई 10

वेद पुराण रहे यश गाई।
करहु भक्त की आप सहाई॥

चौपाई 11

ब्रह्मा ढिंग सरस्वती कहाई।
लक्ष्मी रूप विष्णु ढिंग आई॥

चौपाई 12

शिव ढिंग गिरजा रूप बिराजी।
महिमा तीनों लोक में गाजी॥

चौपाई 13

शक्ति रूप प्रगटी जन जानी।
रुद्र रूप भई मात भवानी॥

चौपाई 14

दुष्टदलन हित प्रगटी काली।
जगमग ज्योति प्रचंड निराली॥

चौपाई 15

चण्ड मुण्ड महिषासुर मारे।
शुम्भ निशुम्भ असुर हनि डारे॥

चौपाई 16

महिमा वेद पुरानन बरनी।
निज भक्तन के संकट हरनी॥

चौपाई 17

रूप शारदा हंस मोहिनी।
निरंकार साकार दाहिनी॥

चौपाई 18

प्रगटाई चहुंदिश निज माया।
कण कण में है तेज समाया॥

चौपाई 19

पृथ्वी सूर्य चन्द्र अरु तारे।
तव इंगित क्रम बद्ध हैं सारे॥

चौपाई 20

पालन पोषण तुमहीं करता।
क्षण भंगुर में प्राण हरता॥

चौपाई 21

ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावैं।
शेष महेश सदा मन लावे॥

चौपाई 22

मनोकामना पूरण करनी।
पाप काटनी भव भय तरनी॥

चौपाई 23

चित्त लगाय तुम्हें जो ध्याता।
सो नर सुख सम्पत्ति है पाता॥

चौपाई 24

बन्ध्या नारि तुमहिं जो ध्यावैं।
पुत्र पुष्प लता सम वह पावैं॥

चौपाई 25

पति वियोगी अति व्याकुलनारी।
तुम वियोग अति व्याकुलयारी॥

चौपाई 26

कन्या जो कोई तुमको ध्यावै।
अपना मन वांछित वर पावै॥

चौपाई 27

शीलवान गुणवान हो मैया।
अपने जन की नाव खिवैया॥

चौपाई 28

विधि पूर्वक व्रत जो कोई करहीं।
ताहि अमित सुख सम्पत्ति भरहीं॥

चौपाई 29

गुड़ और चना भोग तोहि भावै।
सेवा करै सो आनन्द पावै॥

चौपाई 30

श्रद्धा युक्त ध्यान जो धरहीं।
सो नर निश्चय भव सों तरहीं॥

चौपाई 31

उद्यापन जो करहि तुम्हारा।
ताको सहज करहु निस्तारा॥

चौपाई 32

नारि सुहागिन व्रत जो करती।
सुख सम्पत्ति सों गोदी भरती॥

चौपाई 33

जो सुमिरत जैसी मन भावा।
सो नर वैसो ही फल पावा॥

चौपाई 34

सात शुक्र जो व्रत मन धारे।
ताके पूर्ण मनोरथ सारे॥

चौपाई 35

सेवा करहि भक्ति युत जोई।
ताको दूर दरिद्र दुख होई॥

चौपाई 36

जो जन शरण माता तेरी आवै।
ताके क्षण में काज बनावै॥

चौपाई 37

जय जय जय अम्बे कल्यानी।
कृपा करौ मोरी महारानी॥

चौपाई 38

जो कोई पढ़ै मात चालीसा।
तापे करहि कृपा जगदीशा॥

चौपाई 39

नित प्रति पाठ करै इक बारा।
सो नर रहै तुम्हारा प्यारा॥

चौपाई 40

नाम लेत ब्याधा सब भागे।
रोग दोष कबहूँ नहीं लागे॥

समापन दोहा

सन्तोषी माँ के सदा बन्दहुँ पग निश वास।
पूर्ण मनोरथ हों सकल मात हरौ भव त्रास॥